LOK SABHA

Monday, August 29, 1966/Bhadra 7, 1888 (Saka)

The Lok Sabha met at Eleven of the Clock.

[MR. SPEAKER *in the Chair*]

OBTINARY REFERENCE

Mr. Speaker : I have to inform the House of the sad demise of Shri Chuni Lal who passed away at New Delhi on the 28th August, 1966 at the early age of 49.

Shri Chuni Lal was a sitting Member of this House from the Ambala constituency of Punjab. He was also a Member of the Second Lok Sabha during the years 1957 to 1962. He was also a Member of the Estimates Committee during the years 1964-65 and 1965-66 and a Member of the Committee on Petitions during the years 1963-64. He made good contribution in the proceedings of the House and the Committees.

We deeply mourn the loss of this friend and I am sure the House will join me in conveying our condolences to the bereaved family.

Shri Kapur Singh (Ludhiana) : Mr. Speaker, Sir, we from Punjab knew Shri Chuni Lal more intimately than perhaps most other Members of the House not because he was a Punjabi but because he was a man of quiet disposition, mild manners and unobtrusive temperament. These very qualities of his made him a man of reason with whom discussion and dialogue, the essence of democracy, was easy and fruitful. His social origin was humble and humility itself was the hall-mark of his attitude towards his fellowmen and his colleagues and this quality of his lent added charm to his status as parliamentarian. He was hale and hearty only a couple of days ago when I met him, and nobody could even dream that the end was so near in his case. Such is the vanity of human existence.

I associate myself, on my Party's behalf, with the conveying of condolences by the House to the family of the deceased.

श्री बागड़ी (हिसार) : अध्यक्ष महोदय, श्री चुनीलाल दलित जातियों और दलित वर्गों का इस लोक-सभा में नेतृत्व करते थे। उन के इस तरह से अचानक स्वर्गवास हो जाने का जो धक्का उन को और उन के साथियों को लगा है वह भारी है। श्री चुनीलाल एक बहुत ही हंसमुख और मिलनसार व्यक्ति थे। उन का किसी व्यक्ति से व्यक्तिगत कोई द्वेष नहीं था। उन्होंने जो भी यहां लोक-सभा में कार्य किया है वह बहुत सराहनीय है लेकिन एक मानव के नाते से उन की मिलनसारी एक आदर्श वस्तु थी। मैं उस शोक प्रस्ताव में अपने दल को और अपने आप को शरीक करते हुए कहूंगा कि ऐसे लोग जो बिल्कुल दरिद्र गिरोह से ताल्लुक रखते हैं और जिनकी कि जीविका का सिर्फ राजनीति ही इस प्रकार का आधार होता है उन की मृत्यु के बाद उन के परिवार की क्या दशा होती है इस को बहुत आसानी से आप सोच सकते हैं और सदन भी मेरे साथ इस बात में सहमत होगा ।

इसलिए ऐसे लोग जो दरिद्र गिरोह से ताल्लुक रखते हों और जो सम्पत्ति न बना कर समाज और देश की सेवा कर के अपने जीवन की बलि वेदी पर चढ़ा देते हैं उन के लिए समाज और कुछ सरकार को सोचना चाहिए । इन शब्दों के साथ मैं अपनी अथवा अपने दल की ओर से दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं ।

Shri A. C. Guha (Barasat): Sir, I fully associate myself with the remarks and sentiments expressed by you and two other colleagues of mine regarding Shri Chuni Lal. He was a young man of quiet disposition and he was taking keen interest in the work of the Estimates Committee. He might not have got much opportunity for formal and academic education. But I found him quite intelligent and having a cultured outlook about everything and so he was a very pleasant companion in the Committee and all the Members of the Committee who worked with him would feel his loss so deeply. He was taking keen interest in social work for the upliftment of Harijan and other depressed classes, and as such his loss will be a loss to the community which he represented. I pay my deepest respects to his memory and offer my condolence and sympathy to the members of the bereaved family.

श्री युद्धवीर सिंह (महेन्द्रगढ़) : श्री चुनीलाल की मृत्यु का दुखद समाचार आज साढ़े दस बजे मुझे बाहर वापिस आने पर प्राप्त हुआ । मैंने उस से बहुत गहरा सदमा महसूस किया । वह सदमा केवल मात्र एक सदस्य के ही नाते नहीं अपितु उन के साथ अत्यधिक व्यक्तिगत सम्पर्क होने के कारण भी महसूस किया । इस भीषण आघात से मेरे दिल को जो सदमा पहुंचा है और चोट पहुंची है वह मैं शब्दों में वर्णन करने में असमर्थ हूं ।

उन का मेरा बहुत निकट का साथ रहा है । वह रिवाड़ी नगर के निवासी थे । उन के गुणों के बारे में कोई भी चर्चा इस वक्त करना सामयिक नहीं होगा किन्तु एक प्रश्न जो उन की मृत्यु का समाचार सुन कर मेरे दिमाग में निरन्तर घूम रहा है वह यह कि क्या उनकी मृत्यु या उन जैसे राजनीति में काम करने वाले अनेकों नौजवानों की हृदयगति रुक जाने से जो मृत्यु हो जाती है तो क्या यह समाज को चुनौती नहीं है ? हृदयगति रुकने से मृत्यु होने के यह नित्य जो समाचार मिलते हैं उन का कोई कारण समझ में नहीं आता । लोक-सभा के सदस्य लोग इस बात को अच्छे तरीके से जानते हैं कि उन को कोई बीमारी नहीं थी, कोई उन के ऊपर किसी प्रकार का दबाव नहीं था सिवाय इस के कि अपनी विशेष नीतियों या अपने विशेष विचारों के आधार पर देश की सेवा करने या देश की राजनीति में अपनी पार्टी के हिसाब से कार्य करना, यह उन के प्राणों की आहुति देने का कारण बना तो मैं समझता हूं कि यह समाज और देश के वास्ते एक बहुत बड़ी चुनौती है । समाज जहां बहुत सारी बातों में राजनीतिज्ञों को कितनी बातों को लेकर आलोचना का आधार बनाती है वहां समाज के ऊपर इस प्रकार की असामयिक जो मृत्यु है उस को लेकर एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी भी आती है ।

इन शब्दों के साथ मैं अपनी तरफ़ से और अपने दल की तरफ़ से दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि उन की आत्मा को सद्गति व शांति मिले ।

Shri Hem Barua (Gauhati): We are extremely sorry to hear of the sudden death of a friend and colleague of ours, namely Shri Chuni Lal. He has been takne away from us at a time when we needed him most. He was a man of quiet desposition, whose only ambition in life was to serve his country and the people. Such men are rare in our society today. I, on behalf of the Praja Socialist Party, deeply mourn his death and request you to convey our condolences to the bereaved family.

श्री काशी राम गुप्त (अलवर) : श्री चुनीलाल का जन्म स्थान रिवाड़ी था जोकि मेरे क्षेत्र के बहुत नजदीक है और जहां से कि मैंने अपना राजनैतिक जीवन प्रारम्भ किया था। वह मेरे निकटतम साथियों में से थे। जब मैं आज बाहर से आया तो सुबह साढ़े दस बजे यह दुखद समाचार मुझे सुनने को मिला। मेरे दिल को इस से भारी सदमा पहुंचा है। अभी 27 तारीख़ को ही उन्होंने मुझे एक सुझाव दिया था किसी बात के लिए और मुझे यह आशा नहीं थी कि जब तक मैं यहां लौट कर आऊंगा वह इस दुनिया से चले जायेंगे।

अध्यक्ष महोदय, वह सात्विक विचार व जीवन व्यतीत करने वाले थे और यह आघात इसलिए और भी अधिक हो जाता है क्योंकि अभी उनकी छोटी ही उम्र थी। मैं श्री युद्धवीर सिंह और श्री बागड़ी के इस विचार से सहमत हूं कि ऐसे शैडयूल्ड कास्ट्स के भाई जोकि इस तरह से यहां 24 घंटे काम करते हैं और जो कि दरिद्र वर्ग का यहां पर प्रतिनिधित्व करते हैं और जिनकी कि आर्थिक अवस्था कुछ अच्छी नहीं होती है ऐसे लोगों के लिए इस सदन को सोचना चाहिए कि जो इस तरह से असमय मर जाते हैं उनके पीछे उनके परिवार वालों का बंदोबस्त हो। उन के भरण पोषण का बंदोवस्त सोचना चाहिए। जो साधन सम्पन्न हों उनको जाने दीजिये लेकिन ऐसे लोग जिनके कि पास साधन न हों उनके कुटम्ब के भरण पोषण के बारे में सोचा जाना चाहिए।

श्री चुनीलाल बड़े सात्विक विचार वाले और लगन से काम करने वाले व्यक्ति थे। उनके इस आकस्मिक और असामयिक निधन पर मुझे बड़ा दुःख हो रहा है। वह मेरे निकटतम साथियों में से थे और मैं इस दुखद अवसर पर अपनी और अपने दल की ओर से दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

Shri Vasudevan Nair (Ambalapuzha): The news of the untimely and sad demise of Mr. Chuni Lal gave to all of us a rude shock. Allow me to associate my party and myself with the sentiments expressed by you and other Members of this House on this untimely death of our colleague.

Shri A. K. Gopalan (Kasergod): On behlaf of my group, I associate myself with the sentiments expressed here, and request you to convey our condolences to the bereaved family.

श्री जगदेव सिंह सिद्धान्ती (झज्जर): अध्यक्ष महोदय, स्वर्गीय श्री चुनीलाल से मेरा बहुत समय से परिचय रहा है। वह हरियाणा क्षेत्र के सौम्य और शांत स्वभाव के एक बड़े अच्छे कार्यकर्त्ता थे। कल जिस समय उनके आकस्मिक निधन का समाचार मिला मैं स्तब्ध रह गया। मैं वहां का दर्दनाक दृश्य शब्दों में वर्णन करने में असमर्थ हूं और मैं उन के बिलखते बच्चों आदि की दशा देख कर अधिक देर वहां ठहर नहीं सका।

मैं भी इस बात से पूरी तरह सहमत हूं कि ऐसे राजनैतिक कार्यकर्त्ताओं के लिए अवश्य कुछ न कुछ प्रबन्ध करना चाहिए। मैं उनके दुखी परिवार के प्रति अपनी सहानुभूति व समवेदना प्रकट करता हूं और भगवान से यही प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे और उन के बाल-बच्चों के पालन-पोषण की ठीक रूप से व्यवस्था हो जाय।

Shri D. C. Sharma (Gurdaspur): I was shocked to hear about the sudden demise of Chunilalji. Chuni Lalji was a symbol of our independent India, because in independent India, many persons who belonged to the ranks got those chances which were denied to some very high-placed persons at one time. He was picked up by the Congress Party, and he adorned the Congress Party. At the same time, he was one of those persons who made me feel that casteism had been abolished in this country.

While talking to him, I never felt that he belonged to the Harijan class or that I belonged to some other class. I felt that both of us belonged to the same class and that class was the class of humanity. That was the impression he always gave. He was a gentleman, a first-rate gentleman, and I cannot forget his friendly disposition. To sit with him even for two or three minutes was to feel an impact of his generous disposition and of his habit of thinking and his habit of mixing with other persons on a very equal level.

Now that Punjab is being reorganised, I think he would have proved to be a very fine bridge between the Punjab State as it will be reorganised now and Hariana *prant*. I think he would have proved to be a very durable, fine and strong common link in terms of human beings between the reorganised State of Punjab and the reorganised State of Hariana.

We all feel very unhappy about this very sad loss that has occurred. I do agree with Shri Bagri that our Parliament, our Government, should do something for the children of such persons who rise from the ranks and rise to the highest positions but who do not leave much of worldly goods when they pass away from this world. Life hangs by a slender thread and I think Shri Chuni Lal's passing away proves this statement much more than anything else.

I join with you and other friends who have paid their tributes to the departed friend.

The Leader of the House (Shri Satya Narayan Sinha): Mr. Speaker, we all heard with great shock and surprise the extremely sad news of the untimely demise of a sitting Member of this House, Shri Chuni Lal, who represented a reserved Constituency, Ambala, Punjab, in the Lok Sabha.

Shri Chuni Lal was so young and apparently hale and hearty that it is difficult to imagine how death laid its cold, icy hands on him. He was a quiet and unassuming person who did considerable constructive work for the uplift of the backward classes and rural areas. For sometime, he was also a Member of the Estimates Committee.

On behalf of the Congress Party and on my own behalf also, I join in conveying our condolences to the bereaved family.

Mr. Speaker: The House may stand in silence for a short while to express its sorrow.

The Members then stood in silence for a short while.

ORAL ANSWERS TO QUESTIONS

त्रिदेशीय शिखर सम्मेलन

+

*719. श्री नवल प्रभाकर :
श्री हेम बरुआ :
श्री हरि विष्णु कामत :
श्री सुरेंद्रनाथ द्विवेदी :
श्री नाथ पाई :
श्री विश्वनाथ पाण्डेय :
श्री नम्बियार :
श्री कोल्ला वेंकैया :
श्री विभूति मिश्र :
श्री क० ना० तिवारी :
श्री सिद्धेश्वर प्रसाद :
श्री श्री नारायण दास :
डा० लक्ष्मीमल्ल सिंघवी :
श्री प्र० चं० बरुआ :
श्री ही० ना० मुकर्जी :
श्री बागड़ी :
डा० राम मनोहर लोहिया :
श्री मधु लिमये :
श्री राम सेवक यादव :
श्री मौर्य :
श्री किशन पटनायक :
श्री विश्वनाथ राय :
श्री कु० चं० शर्मा :
श्री लहटन चौधरी :